मुंबई विश्वविद्यालय के अंतर्गत शोधोपाधि (पीएच.डी) हिंदी के
पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध-कार्य की रूपरेखा
2022-2023

प्रस्तावित शोध का विषय

‘हिंदी की समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यंग्य साहित्य के विविधायाम’

शोध निर्देशक
प्रो. डॉ. मोहसिन अली ख़ान
एम. ए, एम. फिल, पीएच.डी. (हिंदी)
नेट, म. प्र. स्लेट, राज. स्लेट अनुवाद प्रमाण पत्र
हिंदी विभागाध्यक्ष, जे. एस. एम.
कॉलेज, अलिबाग– 402201

शोधार्थी
महानंदा अमृत शिंधे
एम. ए., बी. एड., एम. फिल. (हिंदी)

शोध-केंद्र हिन्दी, जे. एस. एम. कॉलेज, अलिबाग, जिला– रायगड, महाराष्ट्र– 402201

मुंबई विश्वविद्यालय के अंतर्गत शोधोपाधि (पीएच.डी.) हिन्दी के पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध-कार्य की रूपरेखा

2022-2023

Synopsis of the Thesis to be submitted to the University of Mumbai

For the Degree of Ph.D. in the Subject of Hindi

शोधार्थी का नाम	: महानंदा अमृत शिंधे
Name of Candidate	: **MAHANANDA AMRUT SHINDHE**
प्रस्तावित शोध का विषय:	'हिंदी की 'समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यंग्य साहित्य के विविधायाम'
Title of Thesis	: **'Hindi Kee Samakaleen Mahila Vyangyakar : Vyangya Sahitya Ke Vividhayam'**
शोधार्थी की शैक्षिक योग्यता	: एम. ए, बी. एड, एम. फिल. (हिंदी)
Basic Qualification of Candidate	: M.A, B.Ed., M. Phil. (Hindi)
शोध निर्देशक का नाम	: **प्रो. डॉ. मोहसिन अली ख़ान**
Name of Designation of the Guide	: प्रोफ़ेसर एवं विभागाध्यक्ष स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं शोध-केंद्र, जे. एस. एम. कॉलेज, अलिबाग, जिला– रायगड, महाराष्ट्र– 402201
शोध संस्था का नाम	: स्नातकोत्तर हिंदी विभाग एवं शोध-केंद्र, जे. एस. एम. कॉलेज अलिबाग, जिला– रायगड, महाराष्ट्र– 402201
Research Centre	: J. S. M College, Alibag, Dist– Raigad, 402201
शोधार्थी के हस्ताक्षर	:
Signature of Candidate	:
शोध निर्देशक के हस्ताक्षर	:
Signature of Research Guide	:
सिनॉप्सिस जमा हेतु तिथि :	
Date of Submission of Synopsis	: 06/02/2023

शोध निर्देशक
प्रोफ़ेसर मोहसिन अली ख़ान
शोधकेंद्र-हिंदी
जे. एस. एम. महाविद्यालय,
अलिबाग-रायगड 402 201

Head
Research Centre
PRINCIPAL
J.S.M.College, Alibag

J. S. M. ALIBAG COLLEGE

Board outline for Research Proposal in subject under Faculty of Arts

Outline of the research proposal in (social science and languages) submitted for Thesis as partial fulfilment of Ph.D. degree. The degree of philosophy (Arts) in the subject of **HINDI**

The front page of Research Proposal

Title of the Proposal : 'हिंदी की समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यंग्य साहित्य के विविधायाम'

'Hindi Kee Samakaleen Mahila Vyangyakar : Vyangya Sahitya Ke Vividhayam'

Name of the Candidate	: **MAHANANDA AMRUT SHINDHE**
Educational Qualification of the Candidate	: M.A., B.Ed., M. Phil. (Hindi)
Name and Designation of Research Supervisor	: **Prof. Dr. MOHSIN ALI KHAN** Prof. & Head of Dept. of Hindi J. S. M. College, Alibag, Dist– Raigad 402201
Place of Research Work	: J. S. M College, Alibag– 402201
Date of Submission of Proposal	: 06/02/2023
Signature of candidate	:
Signature of the Research Supervisor	:

शोध निर्देशक
प्रोफ़ेसर मोहसिन अली ख़ान
शोधकेंद्र-हिंदी
जे. एस. एम. महाविद्यालय,
अलिबाग-रायगड 402 201

Sr No.	Content	Page No.
1	Introduction (Theme, Rational and Significance of Study and Importance of theme)	1-3
2	Research problem and hypothesis statement	3-4
3	Research Aim and hypothesis statement	5-6
4	Operational definition of terms and concepts	6
5	Literature review	6
6	Research design (Research method quantitative and qualitative analysis, sample size and level of significance etc.)	6-7
7	Scope and limitations/ delimitations of study Tentative scheme of chapterazation	6
8	Tentative scheme of chapterazation	7-9
9	Expected Result and policy implication	9
10	Bibliography	11-13

प्रस्तावित शोध का विषय

समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यंग्य साहित्य के विविधायाम

प्रस्तावना-

आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य लेखन साहित्य की परंपरा अपना एक विशेष स्थान प्राप्त कर चुका है। समाज और साहित्य का गहरा अंतर्संबंध है, इसलिए समाज में हो उपस्थित विसंगतियों, विकृतियों एवं विद्रूपताओं का एहसास ही व्यंग्य को जन्म देता है। आज प्रत्येक पुराने के स्थान पर नए की स्थापना के प्रयास हो रहे हैं। जीवन से संबंधित पुरानी मान्यताओं का विघटन हो रहा है, अतः यूं कहें कि आधुनिक समाज में विसंगतियां उभरती हुई नजर आ रही हैं। आज का मानव अत्यधिक अशांत स्वभाव का है, इसलिए उसे केवल कल्पनात्मक साहित्य में रुचि कम, बल्कि साहित्य में कल्पना के जगह पर सामाजिक सच्चाई को उजागर करना चाहता है और व्यंग्य लेखन सामाजिक सच्चाई को सामने लाने का एक सशक्त माध्यम बन चुका है। व्यंग्य लेखन सामाजिक विसंगतियों को ही नहीं अपितु मनुष्य के दोषों को भी उसके सम्मुख प्रस्तुत करता है। अतः व्यंग्य लेखन मनुष्य के मन की जिज्ञासा प्रवृत्ति को शांत एवं समाज के विसंगतियों को दूर करने का प्रयास करता है, इसी कारण व्यंग्य का मानव जीवन से घनिष्ठ, निकटस्थ संबंध है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के भारतेंदु युग, द्विवेदी युग के साथ-साथ अनेक कालखंडों में विविध विद्वानों ने व्यंग्य विध को गंभीर रूप से प्रयोग किया है, साथ ही व्यंग्यकारों ने अपनी लेखन शक्ति द्वारा समकालीन साहित्य में अपना अलग ही विशिष्ट पहचान बना चुका है। प्रस्तुत पत्रकारिता के जगत मैं तो व्यंग्य चित्रकारों की धाक है। व्यंग्य विधा अब सुलभ हो गया है। व्यंग्यकार तटस्थ रहकर ही सामाजिक विकृतियों और विसंगतियों को जनसामान्य के सम्मुख प्रस्तुत कर सकते हैं। व्यंग्य विधा का राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में असामंजस्य विद्यमान है। इस प्रकार व्यंग्यकार सुधारक के रूप में एक दर्पण के भांति व्यक्ति और समाज के सच्चे तस्वीरों को खींचकर सामान्यजन को आलोकित करता है। इसलिए अन्य साहित्यिक विधाओं की तुलना में व्यंग्य लेखन का स्वरूप व्यापक हो चुका है। व्यंग्यकार हमेशा कल्पना लोक के बजाए समाज के यथार्थ को अपने व्यंग्य लेखन द्वारा हृदयग्राही बना लेता है। सत्यता ही उसका केंद्र बिंदु होता है। व्यंग्य जितनी संक्षिप्तता से अपने व्यंग्य बाण चलाएगा, वह उतना ही अधिक सफल व्यंग्यकार बनने में सहायक होगा। इस दृष्टि से व्यंग्यकार की व्यंग्य लेखन अत्याधिक महत्वपूर्ण हो चुकी है। समग्र अवलोकन के पश्चात एक बात साफ तौर पर कही जा सकती है कि व्यंग्य सदैव शोषण का विरोधी और शोषित का पक्षधर रहा है। व्यंग्य साहित्य ने सामाजिक सचाई को वास्तविक धरातल पर लाने के साथ उनकी ओर लोगों का ध्यान खींचा है और समाज ने भी इस ओर पर्याप्त ध्यान दिया है। साहियुया की यह विधा अपने में अनुपम ही नहीं, बल्कि एक विशिष्ट छवि कि लेकर उभरती है। इस उभरती छवि में केवल पुरुष व्यंग्यकर ही नहीं, बल्कि समकालीन महिला व्यंग्यकारों ने भी बड़ी दृढ़ता से हस्तक्षेप किया है और विविधता युक्त व्यंग्य साहित्य की रचना अपने समकाल में की है। महिलाओं की नव्या दृष्टि व्यंग्य साहित्य को अब अधिक समृद्ध कर रही है। आगे आने वाले समय में महिला व्यंगयकारों की उपलब्धियां जब बढ़ेंगी तो समकालीन महिला व्यंगयकारों की उपलब्धियां महत्वपूर्ण मनी जाएंगी।

१. शोध की प्रेरणा, विषय चयन, आवश्यकता, औचित्य एवं महत्व-

अपनी शैक्षणिक उन्नति और प्रगति के तौर पर मैंने हिंदी विषय को ही अपना जीवन का अंतिम लक्ष्य मान लिया। क्योंकि हमारे क्षेत्र में बचपन से ही मुझे हिंदी शिक्षक के अभाव के कारण, अपने विषय को खुद ही पढ़ना एवं समझना पढ़ा। जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ रही थी तो मन में ठान लिया कि मुझे जिंदगी में हिंदी विषय को ही चुनना है और हिंदी अध्यापिका बनना है। जिस कारण मैंने हिंदी विषय को प्रमुख स्थान देते हुए अपने शिक्षा जीवन को आगे बढ़ाया। मैंने हिंदी विषय में बी.एड , हिंदी विषय में एम. ए, एवं हिन्दी विषय में ही एम.फिल तक की शिक्षा प्राप्त कर चुकी हूं। अब मेरे जीवन मे मुझे पीएच.डी की उपाधि प्राप्त करना ही एक अंतिम लक्ष्य है, इसी बीच मेरा विवाह हो गया, जिस कारण मुझे अपना राज्य छोड़कर यहां महाराष्ट्र में आना पड़ा , फिर भी मेरे मन में पीएच.डी प्रवेश की चिंता सताने लगी। पर मेरे पति ने मुझे धैर्य प्रधान कर कहा कि "तुम चिंता मत करो दूसरा राज्य हुआ तो क्या हुआ तुम्हें अपने जीवन का लक्ष्य प्राप्त करने मे मैं परछाई की भांति तुम्हारा सदैव साथ दूंगा।" कहकर अगले दिन मुझे जे.एस.एम कालेज अलीबाग ले गए। और वहां पर हमने हिंदी विभागाध्यक्ष को खोजने का बहुत प्रयास किया पर असफल रहे, फिर से दूसरे दिन जे. एस. एम कालेज आए तो पता चला कि डॉ.. मोहसिन खान हिंदी विभाग के प्रमुख हैं, तो उनसे बात करने के लिए उन्हें कालेज में बहुत ढूंढा, पर सही पता न मिलने के कारण वे नहीं मिले। फिर से दूसरे दिन जल्दी ही कालेज आ गए। भगवान की कृपा से सर डॉ.. मोहसिन खान से मुलाकात हो भगवान की कृपा से सर डॉ.. मोहसिन खान से मुलाकात हो गई, उन्होंने कहा कि अभी तो फिलहाल पीएच.डी के प्रवेश शुरू नहीं हुए हैं जब प्रवेश की सूचना मिलेगी तो मैं बताऊंगा कहकर उन्होंने अपना दूरभाषा यंत्र का नंबर दे दिया और मुझे तब तक नेट के लिए प्रिपेर होने की सलाह दी। कुछ दिनों बाद अचानक सर के व्हाट्सएप में पीएच.डी प्रवेश की सूचना का स्टेटस मेरे पति ने देखा तो उन्होंने तुरंत मुझे बताया। तभी सर से बात की तो सर ने ऑनलाइन फॉर्म भरने की सलाह दी। तब सर के आदेशानुसार ऑनलाइन फॉर्म भर दिया, कुछ दिनों बाद पीएच.डी प्रवेश हेतु साक्षात्कार का आयोजन किया था, पहले तो मैं डर गई कि अंतरराज्य के निवासी होने के कारण मेरा प्रवेश हो पाएगा या नहीं। पर कुछ दिनों बाद पीएच.डी प्रवेश करने वालों के नाम प्रकट हो गए, उसमें मेरा नाम भी था तो मैं बहुत खुश हो गई। सर डॉ. मोहसिन खान जी के मार्गदर्शन से मुझे आज पीएच.डी में पढ़ने का मौका मिला। पहले तो मैंने कहानी साहित्य पर शोध करना चाहा, तभी मुझे सर डॉ. मोहसिन खान गुरु जी से पता चला कि व्यंग्य साहित्य पर महिला व्यंग्यकारों को लेकर अभी तक कोई शोध काम नहीं हुआ, तो व्यंग्य साहित्य की ओर मैंने अपनी रुचि जगाई और सर डॉ. मोहसिन खान गुरुजी से मुझे व्यंग्य साहित्य पर शोध करने का विचार, विषय प्राप्त हुआ। जब मैं इस क्षेत्र के लिए सक्रिय हुई तो और भी रुचि बढ़ी, तब मेरे भीतर ने निर्णय लिया कि व्यंग्य साहित्य ही एक ऐसी दिशा का विषय है, जिसमें सामाजिक, संस्कृतिक और अन्य विषयों की खुलकर अभिव्यक्ति की जा सकती है, इस विचार में मुझे इस क्षेत्र में और भी दृढ़ किया।

१. प्रस्तुत प्रस्तावित शोध में व्यंग्य साहित्य के इतिहास पर मौलिक दृष्टि से प्रतिपादन होगा और विकास की रूपरेखा को नया योगदान मिलेगा।

२. प्रस्तुत प्रस्तावित शोध में समकालीन महिला व्यंग्यकारों का परिचय प्राप्त होगा तथा उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं का उजागर होगा।

३. प्रस्तुत प्रस्तावित शोध में समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य संकलनों के माध्यम से समकालीन युग के यथार्थ विषय की अभिव्यक्ति का सम्यक विश्लेषण प्रस्तुत करेगा।

४. प्रस्तुत प्रस्तावित शोध व्यंग्यकारों के अलग - अलग साहित्यिक दृष्टिकोण को अपने महत्वपूर्ण रूप से उजागर करेगा।

५. प्रस्तुत प्रस्तावित शोध में व्यंग्य लेखन एक दर्पण की भांति व्यक्ति और समाज की सच्ची तस्वीरों को हमारे सम्मुख प्रस्तुत करेगा।

६. प्रस्तुत प्रस्तावित शोध में व्यंग्यकारों के लेखन शक्ति द्वारा समाज की समस्याओं, त्रुटियों उनके अंतर्विरोधों, उनकी विषमताओं, उनकी विडंबनाओं को यथार्थ रूप में उपस्थित करेगा।

७. प्रस्तुत प्रस्तावित शोध द्वारा हिंदी साहित्य में व्यंग्य लेखन की समकाल में महिला व्यंग्यकारों की अपार महत्ता को प्रस्तुत कर पाएगा।

८. प्रस्तुत प्रस्तावित शोध समकालीन महिला व्यंग्यकरों का नवीन रूप में विकासात्मक परिचय प्रस्तुत करेगा, जिससे व्यंग्य साहित्य का आद्यंत विकासात्मक भूमिका प्रस्तुत कर पाएगा।

९. प्रस्तुत प्रस्तावित शोध आगामी शोधार्थियों के लिए शोध का मार्गदर्शन करने मे भी सहायक सिद्ध होगा।

२. अनुसंधान समस्या का मूल-

मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है, उसके अंदर विचार शक्ति, विवेकशीलता, बौद्धिकता और हृदय की कोमल वृत्तियाँ हैं। वह अपनी जिज्ञासा प्रवृत्ति द्वारा नवीन साहित्य की सृजन और अपनी अभिव्यक्ति कला के माध्यम से कला के नवीन रूप को विकसित कर सकता है। प्रस्तुत प्रस्तावित व्यंग्य साहित्य में आत्माभिव्यक्ति के साथ जीवनाभिव्यक्ति का भी विशेष माध्यम बन चुका है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में जीवनाभिव्यक्ति का सशक्त एवं महत्वपूर्ण साधन व्यंग्य है। जीवन की व्यथा को कथा के रूप में पाठकों के मन तक पहुंचाता है। यू कहे तो हिंदी साहित्य में कई सारे व्यंग्यकारों का प्रणयन हुआ है। और कई श्रेष्ठ व्यंग्यकारों के व्यंग्य साहित्य को केंद्रित कर विशेष शोध भी हुए हैं; परंतु आज तक समकालीन महिला व्यंग्यकारों पर शोध कार्य नहीं हुए हैं। मेरे द्वारा प्रस्तावित शोध कार्य के केंद्र में विशेष तौर पर समकालीन महिला व्यंग्यकार एवं उनके द्वारा रचित व्यंग्य संग्रहों का अध्ययन हैं, जो कि एक विशेष शोध दृष्टि ग्रहण करके चलेगा। समकालीन हिंदी साहित्य में महिला व्यंग्यकारों की व्यंग्य रचनाएं प्रायः अल्प मात्रा में ही हुई है। इस दृष्टि से समकालीन महिला व्यंग्यकारों द्वारा रचित

व्यंग्य-संग्रहों में समाज, व्यक्ति, युग, यथार्थ, स्वरूप, जीवन, संघर्ष और मानवीय दृष्टिकोण एक महत्वपूर्ण एवं व्यापक अनुभूति लेकर उभरकर आया है। महिला व्यंग्यकारों की जीवन दृष्टि प्रायः साधारण लेखकीय दृष्टि से अलग है, वो अपने वर्तमान समाज की प्रत्येक कुरूपताओं एवं समस्याओं को यथावत प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपनी लेखन कला द्वारा अभिव्यक्त करती है, जो पाठकों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। प्रस्तावित अनुसंधान इसी दिशा की ओर अग्रसर है कि समकालीन महिला व्यंग्यकारों की व्यंग्य कला किस प्रकार अपने समय के समाज को आकालित कर रही है ? युग का यथार्थ रूप उनको किस तरह प्रभावित कर रहा है? वे अपने वर्तमान समय की घटनाओं को किस नजर से देख रहे हैं? उनके संघर्षमय लेखन द्वारा समाज को किस प्रकार दिशा प्राप्त हो रही है? किस प्रकार वे समाज और साहित्यिक जगत को आत्मसात किए हुए हैं? किस प्रकार से उनकी व्यंग्य रचनाओं में भाषा का रूप विशेष तौर पर दिखाई देता है? उनकी जिज्ञासा प्रवृत्ति व्यंग्य लेख किस प्रकार समाज को प्रभावित कर रहा है? ऐसे कई बिंदु हैं, जो अनुसंधान की मूल समस्या को दर्शाते हैं।

विषय में अनुसंधान और विकास की समीक्षा एवं परिकल्पना -

प्रस्तुत प्रस्तावित शोध समकालीन महिला व्यंग्यकारों पर होने के कारण व्यंग्य साहित्य में नवीन शोध की दिशा को संपुष्ट बताते हुए अभिवृद्धि प्रदान करने में सहायक सिद्ध होगा। यह शोध दस प्रमुख महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य संग्रहों पर केंद्रित होगा, जिसके माध्यम से यह स्पष्ट किया जाएगा कि महिला व्यंग्यकारों की व्यंग्य रचनएं अपने में किस प्रकार वैशिष्ट्य का प्रतिपादन कर रही है। प्रत्येक विषय को शोधों द्वारा अभिव्यक्ति प्राप्त नहीं हो सकती, जो विषय अनुशासन की सीमा से परे होती है। व्यंग्य साहित्य में उन सभी महत्वपूर्ण घटनाओं को अभिव्यक्त करने का अवसर प्राप्त हो जाता है, जो समाज के यथार्थ रूप को महत्वपूर्ण तरीके से उजागर कर सके। प्रस्तुत प्रस्तावित शोध दस समकालीन महिला व्यंग्यकारों के जीवन से संबंधित है, जो अपनी व्यंग्य लेखन शक्ति द्वारा समाज में अपना अग्रसर स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। वर्तमान समय में नारी शक्ति को उजागर करते हुए व्यंग्य साहित्य को विकास के पथ पर ले जाने का प्रयास किया जाएगा। प्रस्तावित शोध समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य संग्रहों पर विवरणात्मक रूप से अध्ययन प्रस्तुत करते हुए उनके वैशिष्ट रूप पर प्रकाश डालेगा। रूपरेखा द्वारा दर्शाए गए विभिन्न अध्यायों के माध्यम से व्यंग्य का अर्थ, व्यंग्य का स्वरूप, व्यंग्य की परिभाषा, व्यंग्य के तत्व, व्यंग्य के प्रकार और व्यंग्य साहित्य के विकासक्रम को दर्शाते हुए अलग-अलग अध्यायों के माध्यम से अनुसंधानित समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य संकलनों अलग-अलग अध्यायों के माध्यम से अनुसंधानित समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य संकलनों को विभिन्न उप बिंदुओं द्वारा सम्यक विश्लेषण प्रस्तुत किया जाएगा, जिससे उनकी व्यंग्य संग्रहों के वैशिष्ठ का निर्धारण हो पाएगा तथा व्यंग्य साहित्य को सामाजिक परिवर्तन मानकर उसको महत्वपूर्ण स्थान दिया जाएगा। अंत में समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यंग्य साहित्य की प्रासंगिकता, सरोकार और युगोचितता को रेखांकित किया जाएगा।

३. उद्देश्य-

१. प्रस्तावित शोध समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर करना हैं।

२. प्रस्तावित शोध समकालीन महिला व्यंग्यकारों की प्रतिभा, सक्रियता तथा रचनात्मक शक्ति, रचनाधर्मिता, कौशल को दर्शाना है।

३. प्रस्तावित शोध में श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाओं की विशेषताओं को स्पष्ट रूप से सामने लाना है।

४. प्रस्तावित शोध महिला व्यंग्यकारों द्वारा तटस्थ रूप से समाज की विसंगतियों, मिथयाचार एवं पाखंड, भ्रष्टाचार, विभिन्न क्षेत्रों की विसंगतियों को आम जनता के समक्ष लाना हैं।

५. प्रस्तावित शोध पुरुष व्यंग्यकारों के भांति महिला व्यंग्यकारों को भी समाज मे समान रूप से रचनात्मक कौशल प्राप्त कराना, उनके व्यंग्य साहित्य के योगदान को उजागर कराते हुए इस क्षेत्र में महता, उपलब्धियों को प्रस्तुत करना है।

६. प्रस्तावित शोध महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य संग्रहों द्वारा समाज को विकासात्मक पथ की ओर अग्रसर करेगा, जिससे व्यंग्य साहित्य की अभिवृद्धि तथा नवीन स्थापनाओं को बल मिलेगा।

७. प्रस्तावित शोध समकालीन महिला व्यंग्यकारों का संपूर्ण रूप से अध्ययन कर, उनके वैशिष्ट्य, कौशल, नए शिल्पाभिव्यक्ति को विभिन्न बिंदुओं के माध्यम से प्रस्तुत करना है।

८. प्रस्तावित शोध समकालीन महिला व्यंग्यकारों की भाषा, शैली, अभिव्यंजना कौशल एवं रचना प्रक्रिया को विशिष्ट रूप देना है ।

४. शोध परिचालन संबंधी रूपरेखा एवं नियमों की संकल्पना -

प्रस्तावित शोध से संबंधित दस प्रमुख समकालीन महिला व्यंग्यकारों के मूल पाठ सामग्री को पढ़ना, तथ्य एकत्रित करना, समीक्षात्मक शोध और आलेखों के अभिप्रायों को एकत्रित करते हुए प्रतिक्रियात्मक तथ्यों को प्रस्तुत करना और समकालीन महिला व्यंग्यकारों के यथार्थ अभिमतों की पुष्टि करते हुए शोध को सार्थक एवं नवीन दिशा प्रदान करना है। साथ में प्रस्तुत समाज को यह बताना है कि महिलाएं भी पुरुषों के भांति कंधे से कंधा मिलाकर व्यंग्य साहित्य क्षेत्र में अपना अस्तित्व खुद बना रही हैं। अध्याय एक के अंतर्गत व्यंग्य साहित्य का सैद्धान्तिक और विकासात्मक परिचय देते हुए महिला व्यंग्यकारों को समाहित करना है। अध्याय दो के अंतर्गत व्यंग्य साहित्य का आद्यंत विकासक्रम स्पष्ट किया जाएगा। अध्याय तीन के अंतर्गत समकालीनता के अर्थ, परिभाषा के साथ उसकी अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसके सैद्धांतिक, व्यावहारिक क्षेत्र को उजागर करना है। अध्याय चार में समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यक्तित्व, कृतित्व को उजागर करते हुए परिचयात्मक शोध सामग्री को प्रस्तुत किया जाएगा। अध्याय पाँच के अंतर्गत समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य साहित्य का विषयानुसार सम्यक विश्लेषण करते हुए उनके व्यंग्य के विविधायमों पर विस्तार से शोध करते हुए उसके सरोकारों को उजागर किया जाएगा। अध्याय छह के अंतर्गत समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य साहित्य का शैलीगत अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा। अध्याय सात उपसंहार होगा जिसके अंतर्गत समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य साहित्य की उपलब्धियों, महत्ता,

योगदान को दर्शाने के साथ, महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य साहित्य की सीमाएं, संभावनाएं, भी उजागर की जाएंगी। इसके अतिरिक्त प्रश्नावली के माध्यम से महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य साहित्य के विषय में अभिमत भी एकत्रित किए जाएंगे।

५. शोध संबंधी पूर्ववर्ती कार्य-

देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में व्यंग्य साहित्य परशोध कार्य हुए हैं,परंतुज्यादातर पुरुष व्यंग्यकारों पर ही शोध कार्य संपन्न हुए हैं। महिला व्यंग्यकारों पर शोध कार्य बहुत कम मात्रा में हुए हैं, लगभग न के बराबर, परंतु मेरी जानकारी के अनुसार उपर्युक्त विषय को केंद्र में रखकर अब तक कोई भी शोध कार्य नही हुआ हैं। मुंबई विश्वविद्यालय के अंतर्गत जो शोध कार्य वर्तमान तक संपन्न हुए हैं, उसके आधार पर भी कहा जा सकता है कि उपर्युक्त विषय को केंद्र में रखकर अभी तक कोई शोध कार्य इस विषय को कन्दरा में रखकर नहीं किया गया है। स्पष्ट होता है कि मेरा प्रस्तावित शोध कार्य मौलिकता के साथ - साथ नवीनता भी अपने में समाहित किए हुए है।

६. शोध प्रविधि-

प्रस्तावित शोध कार्य हेतु शोध की विभिन्न प्रविधियों को अपनाया जाएगा, जिससे शोध की प्रमाणिकता को बढ़ावा मिलेगा तथा शोध अपनी सहज गति से आगे बढ़ते हुए अपने परिणामों और निष्कर्ष तक पहुंच पाएगा। इस शोध कार्य करने के लिए पहले प्रस्तावित शोध विषय से संबंधित मूल ग्रंथों का अध्ययन करना आवश्यक होगा। अध्ययन करते समय विश्लेषणात्मक पद्धति को अपनाते हुए तथ्यों और निष्कर्षों को संग्रहित किया जाएगा। विषय से संबंधित आलोचनात्मक एवं ऐतिहासिक पुस्तकों का भी अध्ययन अपेक्षित है, जिसकी मदद से शोध को आकार देते हुए नई दिशा की ओर अग्रसर करने में सहायता प्राप्त होगी। इसके साथ समकालीन महिला व्यंग्यकार के साक्षात्कार लेते हुए उनके अभिमतों की पुष्टि शोध कार्य के दौरान की जाएगी। इस शोध कार्य में समकालीन दस महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य संकलनों की वैशिष्ट कला उजागर हो पाएगा। साथ ही आवश्यकता पढ़ने पर उनसे साक्षात्कार के माध्यम से जिज्ञासाजनक प्रश्नों को पूछकर समस्या का समाधान भी किया जाएगा।

७. शोध की परिव्याप्ति एवं सीमा -

कभी-कभी अधिक व्यापकता भी शोध के लिए घातक सिद्ध हो जाती है और शोध अलक्ष्य होकर अनिश्चित पथ की ओर भटक जाता है। शोध ऐसा होना चाहिए, जिसमें वस्तुनिष्ठता, अन्वेषण, स्पष्टता, सरलत, क्रमबद्धता, तार्किकता, निष्कर्ष इत्यादि का समावेश हो सके। इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि प्रस्तावित शोध एक निश्चित सीमा में आबद्ध किया गया है। हर शोध की एक सीमा होती है, मैंने भी प्रस्तावित शोध को एक सीमा में बांधने का प्रयास किया है, ताकि मेरा शोध कार्य अधिक से अधिक उपयोगी एवं लाभदायक सिद्ध हो सके। प्रस्तावित शोध को समकालीन महिला व्यंग्यकारों पर केंद्रित कियाहै, जिसके अंतर्गत प्रमुख दस समकालीन महिला व्यंग्यकारों की व्यंग्य रचनाओं को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तावित शोध के अंतर्गत प्रमुख समाकलीन महिला व्यंग्यकार सूर्यबाला, स्नेहलता पाठक, डॉ. आशा रावत, अर्चना चतुर्वेदी, मीना अरोड़ा, इंद्रजी कौर, समीक्षा तैलंग, शेफाली पाण्डे, अनीता यादव, अनीता श्रीवास्तव, शामिल हैं। दर्शाए गए महिल व्यंग्यकारों की व्यंग्य रचनाएं अलग-अलग परिस्थितियों में रची गई हैं, इनमें उपस्थित वैविध्यता और जीवन के

विविधआयामों की गाथा दिल को छू लेती है। विभिन्न अध्यायों के माध्यम से व्यंग्यकारों के व्यंग्य कौशल को परिपूर्ण रूप से प्रस्तुत किया जाएगा।

८. शोध – प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा-

‘समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यंग्य साहित्य के विविधायाम’

विषय प्रवेश-

प्रस्तावना-

१.१ शोध की प्रेरणा, विषय   चयन, आवश्यकता, औचित्य   एवं महत्व

१.२ विषय में अनुसंधान समस्या का मूल और विकास की समीक्षा एवं परिकल्पना

१.३ उद्देश्य

१.४ शोध परिचालन संबंधी रूपरेखा एवं नियमाओं की संकल्पना

१.५ शोध संबंधी पूर्ववर्ती कार्य

१.६ शोध प्रविधि

१.७ शोध की परिव्याप्ति एवं सीमा

१.८ शोध प्रबंध की प्रस्तावित रूपरेखा

१.९ अपेक्षित परिणाम एवं नीति विवक्षा

१.१० संदर्भ ग्रंथ सूची

अध्याय- १

व्यंग्य साहित्य : सैद्धान्तिक परिचय

१.१ व्यंग्य : अर्थ एवं परिभाषा

१.२ व्यंग्य : संकल्पना और स्वरूप

१.३ व्यंग्य : तत्व

१.४ व्यंग्य : प्रकार

अध्याय- २

व्यंग्य साहित्य : विकास यात्रा

२.१ हिन्दी व्यंग्य साहित्य : प्रादुर्भाव

२.२ हिन्दी व्यंग्य साहित्य : भारतेन्दु युग

२.३ हिन्दी व्यंग्य साहित्य : स्वतन्त्रता-पूर्व

२.४ हिन्दी व्यंग्य साहित्य : स्वातंत्र्योत्तर

२.५ हिन्दी व्यंग्य साहित्य : समकालीन

समग्र आकलन एवं निष्कर्ष

अध्याय- ३

समकालीन : अवधारणा एवं परिव्याप्ति

३.१ समकाल : अर्थ एवं परिभाषा

३.२ समकाल : अवधारणा, बोध और परिव्याप्ति

समग्र आकलन एवं निष्कर्ष

अध्याय- ४

समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यक्तित्व और कृतित्व

४.१ सूर्यबला
४.२ स्नेहलता पाठक
४.३ डॉ. आशा रावत
४.४ इंद्रजीत कौर
४.५ अर्चना चतुर्वेदी
४.६ शेफाली पांडे
४.७ समीक्षा तैलंग
४.८ मीना अरोड़ा
४.९ अनीता यादव
४.१० अनीता श्रीवास्तव
४.११ अन्य व्यंग्यकार
समग्र आकलन एवं निष्कर्ष

अध्याय- ५

समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यंग्य साहित्य के विविधायाम

५.१ राजनीतिक व्यंग्य
५.२ सामाजिक व्यंग्य
५.३ आर्थिक व्यंग्य
५.४ धार्मिक व्यंग्य
५.५ सांस्कृतिक व्यंग्य
५.६ शैक्षिक व्यंग्य
५.७ प्रशासनिक व्यंग्य
५.८ भ्रष्टाचार व्यंग्य
५.९ साहित्यिक व्यंग्य
५.१० मानवी प्रवृत्तिपरक व्यंग्य
५.११ जीवन-मूल्य व्यंग्य
५.१२ आत्म व्यंग्य
५.११ समस्यामूलक व्यंग्य
५.१३ व्यंग्य का प्रयोजन
५.१४ अन्य व्यंग्य
समग्र आकलन एवं निष्कर्ष

अध्याय- ६

समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यंग्य साहित्य का शैलीगत विवेचन

६.१ रूपगत विवेचन
६.२ प्रतीकात्मक विवेचन
६.३ भाषिक विवेचन (भाषा रूप, शब्द-शक्ति, मुहावरे, लोकोक्ति, काव्यात्मकता, अलंकारिकता नव्य भाषिक प्रयोग)
६.४ संप्रेषणीयता, प्रयोगशीलता और रचना प्रक्रिया

समग्र आकलन एवं निष्कर्ष

अध्याय- ७

उपसंहार

७.१ समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यंग्य साहित्य की उपलब्धियां, संभावनाएं और सीमाएं
७.२ समकालीन महिला व्यंग्यकार : व्यंग्य साहित्य की सरोकार, प्रासंगिकता और युगोचितता
समग्र आकलन एवं निष्कर्ष

९. अपेक्षित परिणाम एवं नीति विवक्षा-

उपर्युक्त प्रस्तावित शोध के माध्यम से समकालीन प्रमुख दस महिला व्यंग्यकारों का अध्ययन किया जाएगा, जिसके तहत सभी महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य संग्रहों की उत्कृष्ट साहित्य का विश्लेषण उपस्थित हो सकेगा। प्रस्तावित शोध के अंतर्गत समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य साहित्य के जगत में महत्वपूर्ण स्थान है, यह स्थान उन्हें कैसे प्राप्त होगा इसका निर्धारण उनके मूल्यवान व्यंग्य साहित्य के द्वारा हमें पता चलेगा । प्रस्तावित शोध के माध्यम से संपूर्ण व्यंग्य साहित्य का इतिहास हमारे सामने उपस्थित होगा। और समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यापक साहित्य की नजारा चक्षुओं के समक्ष दिखने लगेगा। प्रस्तावित शोध के अंतर्गत समकालीन हिंदी महिला व्यंग्यकारों की व्यंग्य साहित्य के माध्यम से उनके वैचारिक और दार्शनिक प्रतिबद्धताओं का समालोचनात्मक अध्ययन प्रस्तुत होगा, इसी के साथ उनकी जीवनाभिव्यक्ति के विविध पक्ष हमारे सम्मुख प्रस्तुत होंगे। प्रस्तावित शोध के अंतर्गत समकालीन महिला व्यंग्यकारों का हिंदी साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत होगा और उनके व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से समाज का यथार्थ बोध एक दर्पण के भांति हमारे सम्मुख दिखाई देगा। प्रस्तावित शोध के अंतर्गत समकालीन महिला प्रस्तावित शोध के अंतर्गत समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यंग्य रचनाओं के माध्यम से उनके भाषागत प्रयोगों का विश्लेषण किया गया है, जिसके द्वारा व्यंग्य साहित्य का वैशिट्य निर्धारित हो सकेगा । प्रस्तावित शोध के अंतर्गत दस प्रमुख समकालीन महिला व्यंग्यकारों की व्यंग्य रचनाओं का अध्ययन किया जाएगा, यह एक मौलिकता है कि वर्तमान समय में बहुत कम मात्रा में महिलाओं की व्यंग्य साहित्य में भागीदारी रही है और कम मात्रा में ही व्यंग्य रचनाओं की भूमिका रही हैं। फिर भी जितनी व्यंग्य रचनाएं उपस्थित हैं, वह हिंदी के व्यंग्य साहित्य में अपना-अपना अलग ही नाम कमा चुकी हैं, जो अविस्मरणीय है। महिला व्यंग्यकारों की व्यंग्य दृष्टि किस तरह से अपने समय के यथार्थ पर तीली है, इसका भी अवलोकन करते हुए सरोकारों की विवेचना की जा सकेगी। इनके व्यंग्य साहित्य का शिल्प-विधान किस प्रकार से प्रयुक्त किया गया हा एवं भाषिक प्रयोगों में वे किस प्रकार से विलग हैं इस बात को भी रेखांकित करने का प्रयास किया जा सकेगा।

प्रथम वर्ष- १. समकालीन महिला व्यंग्यकारों कि मूल व्यंग्य रचनाओं का पाठ करना।

२ . तथ्य और निष्कर्ष एकत्रित करना।

३ . समकालीन महिला व्यंग्यकारों के व्यक्तित्व परिचय संग्रह करना, विश्लेषण करना।

४ . व्यंग्य साहित्य के इतिहास पर पुस्तकें, पत्र - पत्रिकाएं एकत्रित करना।

५ . चयनित विषय का अध्ययन प्रारंभ कर प्रथम और द्वितीय अध्यायों को पूर्ण करना।

द्वितीय वर्ष- १ . प्रस्तावित समकालीन महिला व्यंग्यकारों की व्यंग्य रचनाओं का पुनः अध्ययन करते हुए अध्ययों को विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा लिखना।

२ . किए गए शोध कार्यों क समीक्षा करते हुए अध्ययन तीन,चार, पांच, को विश्लेषणात्मक पद्धति द्वारा पूर्ण करना।

तृतीय वर्ष- १ . प्रस्तावित शोध अध्याय का विश्लेषण, विवेचन करते हुए अंतिम अध्याय लिखना तथा शोध प्रक्रिया का अंतिम लेखन करना।

२ . शोध कार्य का पुनरीक्षण करना।

३ . विश्वविद्यालय में शोध की पूर्णता की अग्रिम रिपोर्ट प्रेषित करना।

४ . शोध कार्य का अंतिम टंकन करते हुए प्रूफ शोधन करना।

५ . विश्वविद्यालय में शोध प्रबंध जमा कराने की प्रक्रिया पूर्ण करना।

१०. संदर्भ ग्रंथ सूची-

(क) आधार ग्रंथ-

१ . जस की तस - आशा रावत, अमन प्रकाशन 1041, अर्बन एस्टेट ११ हिसार - 125 005
२ . गुरु दक्षिणा - आशा रावत, गीतिका प्रकाशन १६ साहित्य विहार बिजनौर (उत्तर प्रदेश)
३ . चाहिए एक भगतसिंह पर ... डॉ. आशा रावत, प्रकाशक हिंदी साहित्य निकेतन १६ साहित्य विहार बिजनौर (उत्तर प्रदेश)
४ . पैसे कहां से दें - डॉ. आशा रावत, प्रकाशक - हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर (उत्तर प्रदेश)
५ . देशसेवा के अखाड़े में - सूर्यबाला, प्रभात प्रकाशन, मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली – 110002
६ . धृतराष्ट्र टाइम्स - सूर्यबाला, प्रभात प्रकाशन, मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली -110002
७ . भगवान ने कहा था - सूर्यबाला, प्रभात प्रकाशन, मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली -110002
८ . पति पत्नी और हिंदी साहित्य - सूर्यबाला, यमन प्रकाशन, कानपुर
९ . गूगल गोकुल - मीना अरोड़ा, शब्दहुति प्रकाशन, डी-22, ग्राउंड फ्लोर, विश्वकर्मा कालोनी, एम.बी.रोड, बदलपुर , दिल्ली -110044
१० . पुत्तल का पुष्पवटूक - मीना अरोड़ा, शब्दहुति प्रकाशन, एम.बी. रोड, बदलपुर, दिल्ली – 110044
११ . निबोरी - मीना अरोड़ा, जिज्ञासा प्रकाशन, ई – 86, ब्लाक, स्वर्ण जयंती पुरम, गोविंदपुरम, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश – 201013
१२ . ईमानदारी का सीजन - इंद्रजीत कौर, पी.एम. पब्लिकेशन, 10- बी. नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली – 110002
१३ . पंचरतंत्र की कथाएं - इंद्रजीत कौर, रुझान पब्लिकशन, एस -2, मैपल अपार्टमेंट, 113 ढाका नगर, सिरसी रोड, जयपुर, राजस्थान – 302012
१४ . अनीता यादव - बस इतना सा ख्वाब है, प्रकाशन- दिल्ली पुस्तक सदन 30 / 36, गली नंबर 9 विश्वास नगर शाहदरा, दिल्ली - 110032
१५ . मैं प्रेम गीत लिखना चाहती हूं - शेफाली पांडे, आरती प्रकाशन, कार रोड, लाल कुआं नैनीताल उत्तराखंड 262402
१६. मजे का अर्थशास्त्र - शेफाली पांडे, प्रकाशक - आधारशिला प्रकाशन , बड़ी मुखानी , हल्द्वानी , नैनीताल , उत्तराखंड- 263139
१७ . गली तमाशे वाली - अर्चना चतुर्वेदी, भावना प्रकाशन दिल्ली 110091
१८. लव की हैप्पी एंडिंग - अर्चना चतुर्वेदी, भावना प्रकाशन , दिल्ली 110091
१९ . घूरो मगर प्यार से - अर्चना चतुर्वेदी भावना प्रकाशन , दिल्ली 110091
२०. मर्द शिकार पर है - अर्चना चतुर्वेदी, साहित्य संचार प्रकाशन, दिल्ली 110094
२१. शराफत का टोकरा - अर्चना चतुर्वेदी, भावना प्रकाशन, दिल्ली 110091
२२. नजर बट्टू - अर्चना चतुर्वेदी, भावना प्रकाशन दिल्ली 110091
२३. कुछ दिल की कुछ दुनिया की - अर्चना चतुर्वेदी , भावना प्रकाशन , दिल्ली 110091
२४. जीव अनशन पर है -समीक्षा तैलंग, भावना प्रकाशन, दिल्ली 110091
२५. व्यंग्य का एपिसेंटर - समीक्षा तैलंग, भावना प्रकाशन, दिल्ली 110091
२६. सच बोले कौआ काटे - स्नेहलता पाठक, भावना प्रकाशन, दिल्ली 110 992
२७. एक दीवार सौ अफसाने - स्नेहलता पाठक, भावना प्रकाशन, दिल्ली 110992
२९. लाल रिबन वाली लड़की - स्नेहलता पाठक, भावना प्रकाशन, दिल्ली 110092

३०. लोकतंत्र का स्वाद - स्नेहलता पाठक, प्रकाशन इंडिया नेट बुक प्राइवेट लिमिटेड, गौतम बुद्ध नगर, दिल्ली
३१. व्यंग्यकार का वसीयतनामा - स्नेहलता पाठक, शताब्दी प्रकाशन, मार्केटिंग रोड चौबे कॉलोनी, रायपुर
३२. द्रोपति का सफरनामा - स्नेहलता पाठक, विश्वभारती प्रकाशन, नागपुर , महाराष्ट्र -19 9140
३३. प्रजातंत्र के घाट पर - स्नेहलता पाठक, विद्या विहार प्रकाशन, कानपुर।
३४. बाकी सब ठीक है - स्नेहलता पाठक , वैभव प्रकाशन , छत्तीसगढ़ , 262338
३५. बेला फूले आधी रात - स्नेहलता पाठक, अमित प्रकाशन, के. बी. 97, कवि नगर, गाजियाबाद, 201002
३६. लेनम् शरणम गच्छामि - स्नेहलता पाठक, के. बी. 97, अमित प्रकाशन, कवि नगर, गाजियाबाद
३७. बचते - बचते प्रेमालाप- अनीता श्रीवास्तव, अनामिका प्रकाशन,५२ तुलाराम बाग, प्रयागराज
३८. यह व्यंग्य कौ पथ – सूर्यबला, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली
३९. लोकतन्त्र का स्वाद – स्नेहलता पाठक, इंडिया नेटबुक्स प्रा. लि. दिल्ली

(ख) सहायक ग्रंथ-

1. इक्कीसवीं सदी में व्यंग्यकार डॉ. बालेन्दुशेखर तिवारी, श्याम प्रकाशन, जयपुर
2. आधुनिक व्यंग्य का स्रोत और स्वरूप, छविनाथ मिश्र, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1979
3. एक व्यंग्य यात्रा. रा. वा. पाटील आलोक, संस्कृति अकादमी, जलगाँव, 1987
4. हिंदी व्यंग्य कर्म एवं समकालीन परिदृश्य, सं. डॉ. विनयकुमार पाठक
5. स्वांतत्र्योत्तर हिंदी कविता में हास्य और व्यंग्य, डॉ. बालेन्दुशेखर तिवारी, अभयपूर्ण प्रकाशन, कानपुर, 1978
6. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी-व्यंग्य निबंध एवं निबंधकार, प्रो. डॉ. बापूराव धोंडू देसाई, चिंतन प्रकाशन, कानपुर, 1987
7. हिंदी प्रतिनिधि निबंधकार, डॉ. उषा यादव, प्रकाशन केंद्र, लखनऊ, 1981
8. हिंदी की श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ, संपादक भगवानदारा मोरवाल, प्रेम प्रकाशन मंदिर, दिल्ली, 1987
9. हिंदी साहित्य में हास्य और व्यंग्य, संपादक श्री प्रेमनारायण टंडन, हिंदी साहित्य भंडार, लखनऊ, 1976
10. हिंदी साहित्य में हास्यरस, डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, 1957
11. हिंदी हास्य-व्यंग्य निबंध-रूपयात्रा, संपादक: संसारचंद्र, किताब महल, इलाहाबाद, 1987
12. हिंदी साहित्य में विविध वाद, डॉ. प्रेमनारायण शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1970
13. हिंदी निबंधों का शैलीगत अध्ययन, डॉ. मु. ब. शहा, पुस्तक संस्थान, कानपुर
14. हास्य की रूपरेखा, डॉ. एस. पी. खत्री, हिंदी प्रचारक पुस्तकालय, बनारस, 1965
15. व्यंग्य क्या? व्यंग्य क्यों? संपादक डॉ. श्यामसुंदर घोष, साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1983
16. व्यंग्य और भारतेन्दुयुगीन गद्य, डॉ. माँगीलाल उपाध्याय, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा, 1987
17. शिक्षा-व्यवस्था पर व्यंग्य, संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
18. चिकित्सा व्यवस्था पर व्यंग्य, संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
19. पुलिस व्यवस्था पर व्यंग्य, संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
20. न्याय व्यवस्था पर व्यंग्य, संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन,दिल्ली
21. सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग्य, संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
22. कार्यालयीन व्यवस्था पर व्यंग्य, संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
23. राजनीतिक परिवेश पर व्यंग्य, संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
24. पारिवारिक जीवन के व्यंग्य, संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
25. साहित्यिक परिवेश के व्यंग्य, संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
26. मानव चरित्र के व्यंग्य, संपादक डॉ. गिरिराजशरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन. दिल्ली
27. बीसवीं सदी के चर्चित व्यंग्य : विजय अग्रवाल, किताबघर, नई दिल्ली

28. साहित्यकारों के हास्य व्यंग्य : भावानी लाल भारतीय (डॉ.) विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
29. शरद जोशी : एक यात्रा शशि मित्र (सं.) किताबघर, नई दिल्ली
30. हरिशंकर परसाई का व्यंग्य साहित्य शशि शुक्ला, किताबघर, नई दिल्ली
31. आधुनिक हिंदी साहित्य में व्यंग्य: वीरेन्द्र मेहहंदीरत्ता, रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साइंस, नई दिल्ली
32. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में व्यंग्य: शेरजंग गर्ग, साहित्य भारती दिल्ली
33.आधुनिक हिंदी काव्य में व्यंग्य बरसानेलाल चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन दिल्ली
34. अमृतराय का कथा साहित्य कृष्णा महेश्वरी, अरविंद प्रकाशन, बंबई
35. मानसरोवर (भाग– 2, 3) प्रेमचंद, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद
36. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी व्यंग्य निबंध एवं निबंधकार-डॉ.बापूराव धोंडू देशाई (झेडगकेर) चिंतन प्रकाशन, 787/4, पशुपति नगर, नौबस्ता- कानपुर-208021
37. हिंदी व्यंग्य साहित्य का संवेदनात्मक विकास- डॉ आशुतोष त्रिपाठी, माया प्रकाशन, 6ए/540, आवास विकास हंसपुरम, कानपुर - 208021
38. व्यंग्य क्या व्यंग्य क्यों - श्यामसुंदर घोष, प्रकाशक - सत्साहित्य प्रकाशन, २०५- बी चावड़ी बाजार, दिल्ली- ११०००६
39. हिंदी व्यंग्य : बदलते प्रतिमान, डॉ. तेजपाल चौधरी, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
40. हिंदी व्यंग्य - निबंध स्वतंत्रता के बाद- डॉ.आशा रावत, हिंदी साहित्य निकेतन,१६ साहित्य विहार, बिजनौर

कोश-

1 आधुनिक हिंदी शब्दकोष, संपादक गोविंद चातक, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली, सं. 1986
2. ज्ञान शब्दकोश, संपादक मुकुन्दीलाल श्रीवास्तव, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, सं. 2030 विक्रमी
3. प्रामाणिकत शब्दकोश, रामचन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य कुटीर, बनारस, सं. द्वितीय।
4. मानक अँग्रेज़ी-हिंदी कोश, संपादक : सत्यप्रकाश / बलभद्रप्रसाद मिश्र, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग सं. 1971 ई.
5. मानक हिंदी कोश (पाँचवाँ खंड), रामचन्द्र वर्मा, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, सं. 1966 प्रथम
6. वृहत हिंदी कोश, सं. कालिकाप्रसाद तथा अन्य ज्ञानमंडल लि. वाराणसी, सं. 2020 विक्रमी द्वितीय
7. संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर, संपादक रामचन्द्र वर्मा, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, सं. 2014 विक्रमी (छठा)
8. संस्कृत हिंदी कोश वामन शिवराम आप्टे, अमर पब्लिकेशन्स, वाराणसी, सं. 1994 ई.
9. संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, संपादक द्वारकप्रसाद शर्मा तथा पं. तरिणीस रामनारायण लाल बेनीप्रसाद, इलाहाबाद, सं. चतुर्थ 1973
10. हिंदी साहित्य कोश, संपादक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी, भाग 1 व 2 सं. तृतीय 1985
11. हिंदी शब्दसागर, प्रथम भाग, संपादक श्यामसुंदर दास, काशी नागरी प्रचारिणी सभा, सं0 1965

(ग) पत्र - पत्रिकाएं

१. आजकल
२. वसुधा
३. व्यंग्य यात्रा